मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
पी. एस. ई. (रीटायंड)

वर्ष 7 | शनिवार 10 जनवरी 1981 | संख्या 9

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 3-11-1981

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम,
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम।

बसा कर गुरु मूर्ति मन के अन्तर,
सिर्फ प्रेम दीपक जलाया करो तुम।

कभी तो उन्हें भी खबर हो रहेगी,
करुणा राग अपना सुनाया करो तुम।
वो दाता दयालु, अवश्य देंगे दर्शन,
सदा ध्यान उनका लगाया करो तुम।

भजन, ध्यान से यह भटकने न पावे,
निठुर मन को निशदिन चिताया करो तुम।

मिलेंगे गुरु अपने जीवन के साथी,
तड़प मन में दर्शन बढ़ाया करो तुम।
मनोकामना होगी पूर्ण तुम्हारी,
राधास्वामी का नाम गाया करो तुम।

मैं जब इस रास्ते में आया था तो मैंने प्रण किया था कि जो मेरा अनुभव होगा वो दुनियां को बता जाऊंगा। जुलाहा अपने पेट को खातिर 8-10 गज़ कपड़ा रोज़ बुनता है। वो रुपया गज़ कमा लेता है। करता तो वह अपने लिए है मगर उससे फायदा क्या होता है ? कुछ वह कमाता है, फिर धोबी इस थान को धोता है कुछ वह कमाता है, दर्जी कपड़े सीता है कुछ वह कमाता है, पहनने वाला सर्दी, गर्मी से बचता है, फिर जब गल सड़ जाता है, चीथड़े हो जाता है तो मिल्लों में चला जाता है वहां उसके कागज़ बन जाते हैं। तो काम तो जुलाहे ने अपने लिए किया किसी पर उसने एहसान नहीं किया मगर उसके काम का कितना फायदा हुआ। ऐसे ही मैंने काम किया। मुझे पता नहीं कि इस मेरे काम से दुनिया को क्या लाभ

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

होगा मगर मैंने जो कुछ भी किया अपने लिए किया। आज यह शब्द निकला :—

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम,
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम।

लोगों को एक सहारा देना कि नाम जपो भई, तर जाओगे यह एक और चीज़ है। मगर मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द! तूने नाम से लौ लगाई और 1905 से लेकर आज तक चलता रहा, तू बता तुझको क्या मिला? मैं अगर आप लोगों को यह बात कहूं कि नाम से लौ लगाया करो तो मुझे सोचना चाहिए कि मुझे नाम से लौ लगाने का क्या लाभ हुआ? अगर मुझे ही लाभ नहीं हुआ तो तुमको जो मैं उपदेश करता हूं मैं मूर्ख हूं। आजकल जितने सतसंगी हैं एक गुरु से नाम ले लेते हैं। उनको कुछ मिले या न मिले वो औरों को घसीट घसीट कर वहां उनको नाम दिलाते रहते हैं। यह दीवानापन नहीं तो और क्या है? मुझे नाम से लौ लगाने से दिमाग के अन्तर एक ऐसी अवस्था आ जाती है जहाँ उसमें न नाम रहता है और न अनाम रहता है, न मैं रहता हूं न तू रहता

है, न गुरु रहता है न राम न कृष्ण रहता है, न मालिक रहता है। मेरा क्या हो जाता है? मेरे दिमाग के अन्दर हैपने की अवस्था में ऐसी हालत छा जाती है जहां न मुझे ख्याल है कि मैं हूं, न मुझे ख्याल होता है कि मैं नहीं हूं, न गुरु का ख्याल, न शब्द होता है, न प्रकाश होता है और न कोई और वस्तु होती है। एक अवस्था ऐसी हो जाती है जहां उसको तुम गुम हो जाना कह लो मगर कुछ है सही। मुझे नाम के रटने और जपने से यह मिला।

अब बताओ उस अवस्था को प्राप्त करने के लिए कौन तैयार है? तुम लोग या हम लोग जो नाम जपते हैं दुनियां की आशाओं और दुनियां के कारोबार के लिए जपते हैं मगर मैंने दुनिया की आशाओं के लिए नाम नहीं जपा और मैं जहां पहुंचा वह मैंने बता दिया। मगर अभी मुझे होश आ जाती है और फिर आप लोगों से बातें करने लग जाता हूं और यही बात राधास्वमी दयाल ने लिखी है कि मिलता क्या है? संत नाम दे कर जीव को कहते क्या हैं और कहां पहुंचाते हैं?

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हृदय तान करारी।
संत दयाल जीव हितकारी, भेद कहें अब निजकर भारी।

हम नाम क्यों जपते हैं ? हमारे अन्तर किसी वस्तु की तालाश है। हम कुछ न कुछ चाहते हैं। कोई दौलत चाहता है, कोई इज्जत चाहता है, कोई भगवान को चाहता है, कोई मुक्ति चाहता है, भाव यह है कि कोई न कोई चाह हमारे अन्तर है। नाम हम क्यों जपते हैं ? क्योंकि जब तक इन्सान को किसी न किसी प्रकार की चाह है उसको सुख या शान्ति नहीं मिल सकती वह दौड़ता रहेगा। तो इस चाह को कौन वस्तु समाप्त करती है। राधास्वामी दयाल या दूसरे संतो का नाम जपने से क्या मिला यह मैं नहीं जानता। अगर यह समझो कि नाम जपने से संतों को बीमारियां नहीं आईं उनके पुत्र नहीं मरे या उनको घाटे नहीं पड़े यह फजूल है। राधास्वामी दयाल पिछले दो वर्ष इतने बीमार रहे कि जिसका कोई हिसाब नहीं। दूसरे गुरु जो नाम जपते थे उनका क्या हाल हुआ। नाम जपने से सांसारिक वस्तुयें नहीं मिलती। जब मैं कहता हूं कि नाम से सांसारिक इच्छायें पूर्ण

नहीं होती तो मेरा मतलब उस असली नाम से है जहां शरीर, मन और रूह की तीनों अवस्थायें समाप्त होकर शेष ज़ात रह जाती है और इस नाम से आवागमन छूट जाता है और परम शान्ति मिलती है। क्योंकि वो नाम चौथे पद में रहता है यह असली नाम मन के चक्र से निकालकर इस चक्र को हमेशा के लिए मिटा देता है। 'न रहे बांस, न बजे बांसुरी'। यह ऐसी जगह पहुंचा देता है। जहां हमारी आद है। जहां से हम आये हैं वहां न कोई मैं है और न तूं है। एक तत्व है क्या है क्या नहीं बस, इसको ज़ात कहते हैं। किसी ने कह दिया अल्ला, अनामी या अकाल पुरुष। वो अवस्था है, नाम इन्सान को इस अवस्था में पहुंचाता है। दुनिया यह समझती है नाम जप लो तो तुमको पुत्र मिल जाएगा तुम्हारी बीमारी चली जाएगी। या निम्न दर्जो में जिस नाम से संसारिक वस्तुयें प्राप्त होती है या हमारी सांसारिक हालत सुधरती है या बीमारी भी जा सकती है वो शरीर, मन और रूह की एकाग्रता या समता के कारण है। वह भी तब जब संसार की जिस इच्छा या वासना को

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रख कर अगर तुम अपने मन को एकाग्र या इकट्ठा करोगे तब वो वस्तुयें मिलेंगी मन के इकट्ठा होने से, तुम्हारे मनोबल के बढ़ जाने के कारण तुम्हारी सांसरिक इच्छायें पूरी होंगी वो भी जहां तक तुम्हारी अपनी ज़ात का सम्बन्ध है दूसरे के लिए नहीं यह संसार की चीजें जो हमें मिलती हैं यह हमारी वासना या हमारे कर्मों के कारण हैं। जैसे जैसे हम कर्म करेंगें वैसा वैसा हमें फल मिलेगा। जो किसी को मिलता है यह उसको अपने कर्म, अपने विश्वास, अपनी श्रद्धा का फल मिलता है। मैंने इसलिए इस सचाई को बताया कि हम गृहस्थी लोग ग़लत समझ या अज्ञान के कारण गुरुओं के पीछे न फिरें।

मैं इस बार बाहर गया, मैंनेलोगों की बातें सुनीं कि बाबा ! तू ने यह कर दिया वह कर दिया मेरे तो बाप को पता नहीं। जो कुछ तुम लोगों को मिलता है यह तुम्हारा विश्वास है। एक आदमी मुझे मिला वह मुझे कहता था बाबा जी पेशाब की बीमारी थी मैंने बहुत ईलाज करवाया लेकिन ठीक नहीं हुआ। आप की फोटो मैंनें पानी के गलास में डाल दी सुबह फोटो गल गई मैं पी गया और राज़ी हो

गया। अब बताओ मुझे स्वयं पेशाब की बीम... है, तो मैं गृहस्थियों को कहना चाहता हूं कि इस ख्याल से गुरुओं के पीछे मत दौड़ो कि तुम्हारी बीमारी दूर हो जाएगी या तुमको घाटा नहीं पड़ेगा। ऐसा करोगे तो तुम भूल में हो। यह तो जो कुछ तुमने कर्म किये हुये हैं उसका फल तुमको मिलेगा। किसी गुरु ने, किसी महात्मा या किसी परमात्मा ने तुम्हारे जीवन को नहीं बदलना। अगर बदलना है तो तुम्हारे अपने ही विश्वास नें, अपनी ही श्रद्धा तथा कर्म ने बदलना है। यही है जो कुछ मैंने समझा।

तो मुझे नाम से क्या मिला ? यही मिला जो मैं कह रहा हूं कि मेरा अन्त यह हुआ। मैंने जो पिछले कर्म किये हुये हैं उनका फल मैं भी भुगत रहा हूं।

जब मैं वहां चला जाता हूं तो न मेरा शरीर है, न मैं हूं, न कुछ और है वह तो एक तत्व "

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

नाम से मुझ को यही मिला और स्वामी जी ने भी जेठ महीने में यही बात कही है :—

जेठ महीना जेठा भारी,
जीवन हृदय तपन गुजारी।
संत दयाल जीव हितकारी,
भेद कहें अब निज कर भारी।
नहीं खालक, मखलूक न खिलकत,
करता कारण काज न दिक्कत।
द्रष्टा दृष्टि नहीं कुछ दरसंत,
वाच, लुक्ष नहीं पद न पदार्थ।
ज़ात सिफात न अव्वल आखिर,
गुप्त न प्रकट बातिन ज़ाहिर।

गुरु क्या करता है ? भेद बताता है। वो यह भेद देता है कि भई ! जहां से हम आये हैं वहां न खालिक है, न खिलकत और न कुछ नज़र आता है न कोई देखने वाला है तथा न दिखाने वाला है। वो यह प्रशंसा करते हैं परमात्मा और असली मालिक की कि वो तो यह है कि वहां न ज़ात है, न सिफ़ात है। वह क्या है ? कोई क्या कहे कि वह क्या है। मैं सारी जिन्दगी राम को मिलने के लिए पागल हो गया और 12—12 घंटे अभ्यास किया, अब भी करता

हूं । रात को इसी वहम में रहता हूं । अतः हमारी असली हालत वह है । आजकल कई सन्त कहते हैं हम परमात्मा के साथ मिले हुये हैं या कितने ही व्यक्ति यह कहते हैं कि हमको राम या कृष्ण के दर्शन हो गये यह बकवास करते हैं, हमको धोखा देते हैं और हम गृहस्थी लोग उनके पीछे दौड़ते हैं और उनके पांव चूमते हैं । क्यों ? सच्चाई नहीं बताते । जिस राम के उन्होंने दर्शन किये वह राम नहीं था वो उनके अपने ही मन का विश्वास तथा मन की घड़त थी । असल मालिक तो वह है जो अवस्था मैंने आपको बताई । :—

राम, रहीम, करीम न केशो,
कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं था सो ।

जो कुछ मैंने कहा वही यह कहते हैं । वहां क्या है ? कुछ है, मगर उसको ब्यान करने की शक्ति नहीं । नाम ने मुझे वहां पहुंचाया मगर अभी तक मुझ से वहां ठहरा नहीं जाता । वहां पहुंचने से मुझे क्या लाभ हुआ । दुनिया ही भूल जाता हूं । अपनी जिन्दगी का सम्पूर्ण खेल समाप्त हो जाता है । उस अवस्था में न दुख है न सुख

है मगर फिर आ जाता हूं क्योंकि यह मेरे वश की बात नहीं और मैं हैरान होता हूं।

सिम्रित शास्त्र न गीता भागवद्।
कथा, पुराण न वक्ता कोरत॥

अब देखो! संतो के मार्ग ने उन्हें यहां तक पहुंचाया और यहां इस खुदा के नाम पर क्या कुछ नहीं हो रहा। अनेक फ़िरकों के झगड़े, देख लो क्या हुआ इस ईश्वर के नाम पर! कितने ही सम्प्रदाय बन गये, संत दुनियां में आये उन्होंने यह बताया कि तुम जिस ईश्वर या मालिक के नाम पर आपस में लड़ते हो वो है क्या, वह तो वह अवस्था है जहां हम ही नहीं रहते, जहां मैं ही नहीं रहता है, न तू रहती हैं। और संतो ने शायद यह सोचकर कि जो लोग मज़हब के नाम पर आपस में लड़ते रहे हैं इनको अगर सच्चाई बता दी जाये तो हमारी धार्मिक एकता हो जाएगी। इसलिए इस तालीम को फैलाने की आवश्यकता समझी :—

सेवक सेव न दास न स्वामी।
नही सतनाम न नाम न अनामी।

वह कहते हैं जहां हमने जाना है वहां सतनाम भी नहीं है, नाम भी नहीं है और अनामीपन भी नहीं है, यह है जिस नाम को मुझे प्राप्ति हुई और जहां यह नाम पहुंचाता है। जो कुछ मैंने कहा था वही स्वामी जी ने भी कहा है। आज दाता दयाल का शब्द था :—

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम,
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम।

मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। यह है जहां नाम ने मुझे पहुंचाया। मैं वहां कैसे पहुंचा ? गुरु की दया से और आप लोगों के तजुर्बों से। जब से मुझे मन के रूप का पता लगा तथा यह याकीन हो गया कि मेरे अन्तर में जितनी शक्लें व रूप बनते थे वो मेरे अपने ही मन की कल्पना व ख्याल का परिणाम था और यह मायावी हैं, बाहर से कुछ नहीं आया तब से मुझे मन व माया के चक्र से परे जाने से इस नाम की प्राप्ति की ओर जाने का मौका मिला। यह शक्लें असली और सच्चे नाम को प्राप्त करने में रुकावट डालती है। मगर वहां तो वो जाएगा जिस

को सांसारिक इच्छायें, आशायें और कामनायें नहीं हैं जो सांसारिक इच्छायें रखते हैं उनके लिए यह संतमत की ऊंची तालीम है ही नहीं और न ही उन्हें संतमत की ओर आना चाहिए। उनके लिए यही है कि अपने ख्याल की दुनियां को ठीक बनायें। तुम्हारा विश्वास है, जैसा तुम्हारा विश्वास और ख्याल होगा वैसी तुम्हारी दुनिया बनती जाएगी। इसलिए जो असली नाम है वह और चीज है तथा दुनिया की चीजें और चीज हैं। दुनिया के कारोबार की उन्नति के लिए क्या करना चाहिए ? सुमिरन और ध्यान।

बसा कर गुरु मूर्ति मन के मन्दिर,
सिर्फ प्रेम दीपक जलाया करो तुम।

मूर्ति गुरु की हो या किसी की भी हो; जो इच्छा हो बनाओ। उस मूर्ति को बनाकर अपने अन्दर में ध्यान किया करो। जब तुम्हारा ध्यान पक जाएगा जो तुम्हारे मन की इच्छा होगी वह पूरी होगी। इसका उस नाम से कोई सम्बन्ध नहीं है। जहां हम को नाम पहुंचाता है वह बिल्कुल अलग वस्तु है और वह असली नाम केवल उनके लिए है जो इस आदा-

गमन से बचना चाहते हैं कि दुबारा जन्म न लें, यह उनके लिए है। दुनियादारों के लिए यह निम्न दर्जे का नाम है कि मूर्ति को अपने अन्तर बसाओ। मैं नहीं कहता कि मेरी मूर्ति बसाओ। जिस रूप में तुम्हारा विश्वास है उस रूप में बसाओ यह मेरा तजुर्बा है। मैं किस परिणाम पर आया? कि ऐ इन्सान! तेरे अपने ही ध्यान की शक्ति का फल है। इसलिए दुनियादारों को चाहिए कि दुनिया के कामों के लिए ध्यान किया करें, अपने अन्तर में ध्यान करें। जो कुछ तुम्हारी इच्छा है वह मांगो न मिले तो मैं जिम्मेदार हूं। ध्यान करना तुम्हारा काम है, मैं नहीं कहता कि मेरा करो जिसका भी करो उसको पूर्ण मानो कि वह सब कुछ देने वाला है तुम्हारी दुनियां बन जाएगी यह बिल्कुल सच्ची बात है। इस में कुछ भी झूठ नहीं:—

कभी तो उन्हें भी खबर हो रहेगी,
करुणा राग अपना सुनाया करो तुम।

वो एक ही बात है। उन्होंने कह दिया उसको खबर मिलेगी, मैं कहता हूं तुम्हारी अपनी प्रबल इच्छा जो है वही तुम्हारी इच्छा पूर्ण करेगी।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तुम प्रबल चाह रखो । मैं गृहस्थियों को यह कहना चाहता हूं कि किसी के दरवाज़े पर जाकर भीख मत मांगो सब कुछ तुम्हारे अपने अन्तर में है अपने अन्तर एक रूप उस मालिक का मान लो । अपने आप को सच्चे दिल से उसके अर्पित करने के लिए खोपड़ी में जाया करो । मैं जिम्मेवारी लेता हूं अगर तुम्हारे काम पूर्ण न हों तो जहाँ मेरी फोटो पर फूल चढ़ाते हो वहां जो चाहे व्यवहार किया करो । मैं तुम्हारी हमदर्दी के लिए तुमको कहता हूं कि अपनी जायदादें हरिद्वार में या किसी और जगह इन मन्दिरों के लिए क्यों देते हो । कोई कुछ नहीं देता । ऐ इन्सान ! तेरे अपने दिल की सच्ची लगन, तेरे दिल की प्रबल चाह, तेरे अपने ही ध्यान की शक्ति तुमको सब कुछ देती है । यह है सच्ची बात जो कि मैं कहना चाहता हूं क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा । मैंने जान देनी है । अगर मैं आज तुम लोगों से सचाई का व्यवहार नहीं करता तो मेरा अन्त क्या होगा । इसलिये मैं तुम्हारी आंखों में मिट्टियां डालकर कि हां, मैं तुम्हारे अन्दर प्रकट होता हूं, मैंने तुमको पुत्र दिया या बीमारी से बचा दिया मैंने तुमको

यह कर दिया ऐसे ख्यालात देकर और अंधेरे में रखकर मैं तुम लोगों से बिल्कुल सेवा नहीं लेना चाहता।

तो नाम जपने से मुझे क्या मिला ? जो ऊंची अवस्था है वहां तो अभी मुझ से ठहरा नहीं जाता। मगर मेरा अनुभव यह है कि दुनिया में मैं मन में रहता हूं, सुमिरन व गुरु का ध्यान रखने से, ध्यान की शक्ति से मेरे भी सारे काम होते हैं और दुनिया के भी होते हैं। मैंने यह आसान तारीका बता दिया अब अमल करना तुम्हारा काम है। अगर तुम नहीं करते तो इसमें मेरा क्या कसूर है या गुरु का क्या कसूर है। तुम आप करो :—

वो दाता दयालु अवश्य देंगे दर्शन,
सदा ध्यान उनका लगाया करो तुम।

लगन रखो ! मैं मालिक को मिलने के लिए लगातार 24 घन्टे रोया था। प्रकृति मुझे वहां ले गई जहां मेरा सारा काम बन गया। तुम्हारे दिल में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सचाई होनी चाहिए मैं बार-बार इस बात पर जोर देता हूं कि कहीं मत जाओ, न मन्दिर में, न तीर्थ में और न फकीर चन्द के पास। फकीर चन्द के पास केवल इसलिए जाओ कि उसके पास से तुमको समझ आ जाये। गुरु के पास इसलिए जाया जाता है कि हमको सच्ची बुद्धि मिल जाये। हमको Line of action मिल जाये, हमने क्या करना है, इसका पता चल जाये। इसलिए गुरु की सेवा तथा सत्संग की महिमा है। सत्संग में मिलता क्या है :—

बिनु सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।

सत्संग में इसलिए जाओ कि सत्संग में सच्ची समझ या सोझी मिलती है। सत्संग में इसलिए मत जाओ कि बाबा फकीर तुमको पुत्र दे देगा या बाबा फकीर या किसी ने तुम को यह कर देना है। बल्कि यह तुम्हारा अपना ही विश्वास है। हम गृहस्थी असलीयत को न जानने के कारण लुट गये और इन सचाई न बताने वाले गुरुओं ने हम को मूर्ख बना कर लूटा है, किसी ने कोई सच्ची बात नहीं बताई।

हम लुटने में मजा लेते हैं। मैंने आपको बिल्कुल साफ कह दिया कि सब कुछ तुम्हारे अन्दर में है, तुम में है। एक रूप बना लो। उस सत्संग में जाओ जहाँ से तुमको समझ व सच्चा ज्ञान मिलता है :—

भजन ध्यान से यह भटकने न पावे।
निठुर मन को निशदिन चिताया करो तुम।

सुमिरन ध्यान से मन को इक्ट्ठा करने का साधन किया करो। तुम किसी नाम से भी इकट्ठा करो मतलब तो तुम्हारे मन के ख्याल के इकठ्ठा होने, से है। तुम्हारे मन की एकाग्रता ने व तुम्हारे चित्त की वृत्ति की एकाग्रता की अवस्था ने तुमको लाभ पहुंचाना है, शान्ति देनी है, Will Power बढ़ानी है, तुम किसी भी नाम और किसी भी तरीके से इकट्ठा करो केवल मन को एकाग्र करने की कोशिश करो। इसमें धर्म और पंथ का तो कोई झगड़ा ही नहीं रहा, इस नाम के झमेले में क्या रखा है। कोई नाम जो गुरु ने बता दिया उस नाम के सहारे अपने चित की वृत्ति को एकाग्र करने की कोशिश करो, जहां तुम्हारा मन एकाग्र हुआ तुम्हें आनन्द, खुशी और

मस्ती भी आएगी और तुम्हारा काम भी हो जाएगा यह बिल्कुल आसान बात है :—

मिलेंगे गुरु अपने जीवन के साथी,
तड़प मन में दर्शन की बढ़ाया करो तुम।
मनोकामना होंगी पूर्ण तुम्हारी,
राधास्वामी का नाम गाया करो तुम।

अब राधास्वामी है क्या ? पंथ चलाने वालों ने एक टैकनीकल अक्षर रख दिया :—

राधा आद सुरत का नाम,
स्वामी आद शब्द पहचान।

सुरत का अपने अन्तर में शब्द के साथ मिल कर सुनना। उसकी जो वो हालत है उस हालत का नाम राधास्वामी है। अगर एक आदमी राधास्वामी नहीं कहता मगर सुरत को शब्द के साथ लगाता और मिलाता है वह भी राधास्वामी हैं। मैं उसको राधास्वामी समझता हूं। मेरी बात को समझना, राधास्वामी कोई फ़िरका नहीं है। हमारे अन्दर सुरत है और शब्द है। जब सुरत शब्द को सुनती है तो उससे मेल खाती है। उस हालत व उस अवस्था का नाम राधास्वामी है। राधा

को स्वामी से मिला देना, यानि सुरत को शब्द से मिला देना। मैंने राधास्वामी मत में तालीम पाई है मगर मैं टेकी नहीं हूं, आज़ाद ख्याल का हूं। कोई जो सुरत शब्द का अभ्यासी है भले ही किसी पंथ का हो एक ही बात है :—

सुरत शब्द दो अनुभव रूपा,
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

तो आज मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया। तुम आते हो, आकर बात को समझो और उस पर अपने घर में जाकर अमल किया करो। तुम्हें तब फायदा होगा। अगर अमल नहीं करते, यहां आये इस कान सुना उस कान निकाल दिया तो क्या फायदा। मैं भी बोल-बोल कर थक जाता हूं। बूढ़ा आदमी हूं आप ने भी कान रस ले लिया। आपके आने का क्या फायदा, आप क्यों आते हो? आते हो तो मेरी बात को सुनो, सुनकर गुनो। अगर अच्छी लगी है और तुम्हारा दिल कहता है कि मैं जो कुछ कह रहा हूं ठीक कह रहा हूं तो उस पर अमल करो तब तुम को फायदा होगा वरना :—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सत्संग करत बहुत दिन बीते,
अब तो छोड़ पुरानी बान।

सत्संग करते करते बहुत मर गये, ऐसी कौन सी जगह है जहां सत्संग नहीं होता। कहीं निरंकारियों का सत्संग, कहीं अकालियों का सत्संग, कहीं सनातनियों का सत्संग; सत्संग सब दुनियां में ही होते हैं। क्या दुनियां तर गई ? तरना तुमने आप है केवल अमल करो। मुझको, नाम से क्या मिला ? इस समय तक जहां मैं पहुंचा हूं मैंने बता दिया। दुनियां की बातें भी बता दीं। आप लोगों को तो ऊपर जाने की आवश्यकता नहीं। आप लोग एक विश्वास, एक आस रखो, कहीं भटका मत खाओ, बजाय बाहर में बाबा फकीर, देवी के पीछे जाने के अपने अन्तर में चलो। तुम्हारा काम बन जाएगा और न बने तो मैं जिम्मेवार हूं।

—o—

नोट :—

आप लोग मेरे सत्संग में आते हैं अगर मेरा ध्यान करने से आपकी मनोकामनायें पूरी नहीं होती तो यह समझ लो कि मैं संत नहीं हूं एक ही बात है, फिर आने की कोई आवश्यकता नहीं बशर्ते कि तुम ध्यान कर सको, मेरे रूप को अपने अन्दर बसा सको और जब तक मेरे पास रहते हो पूरे ध्यान से मेरी तरफ देखते रहो। अगर मनोकामनायें पूर्ण नहीं होती तो मेरा कसूर है, आपका कसूर नहीं क्योंकि संत के संग का प्रभाव होना चाहिए। संत का प्रभाव है शान्ति व तसकीन। तो फिर सत्संग करने का क्या फायदा। अगर किसी गुरु के दरवार में जाकर हम को शान्ति व तकसीन नहीं मिलती, तुम्हारे भ्रम नहीं जाते तो वहां जाने का क्या फायदा। वहां जाकर क्यों सिर मुँडाये हो ? मैं तो यही कोशिश करता हूं कि अपने आप को आमिल बनाऊं। अगर मेरे में नुक्स है तो आपको

फायदा नहीं पहुंचेगा, अगर मैं सच्चा हूँ तो आपको फायदा पहुंचना चाहिए। फायदा क्या है ? आपको शान्ति व तसकीन मिलनी चाहिए। बाकी रह गया दुनिया के कारोबार यह तो भई, जो कुछ तुमने किया हुआ है तुमको वो मिलेगा। फिर भी अगर तुम्हारा विश्वास है तो इसमें भी तुमको फायदा हो सकता है।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक ९-११-१९८०

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी ।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भव भय मेटनहारी ।

लीला अगम अपार अमाया, अद्भुत क्या कोई जाने ।
ऋषि मुनि जोगी पार न पावें ज्ञानी नहीं पहचानें ।

अगुण सगुण के मध्य विराजे नहीं ब्रह्म नहीं माया ।
रूप अरूप के वरे परे तुम, नहीं प्रकाश नहीं छाया ।

सब में व्याप्त तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त के पारा ।
मन वानी की गम नहीं तुममें, सबमें सब से न्यारा ।

क्या कह करूं तुम्हारी स्तुति, अजर अमर अविनासी
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन घन सुख रासी ।

गो गोचर जहां लग मन जाई, सो नहीं देश तुम्हारा
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई बरने पारा ।

तत्व अतत्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई ।
सन्त कहें तुम शब्द रूप हो, और अशब्द गति सोई ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ऊंचो दृष्टि करे जो प्रानी, सार भेद कुछ पावे।
भेद पाय शरणागत आवे, आवागवन मिटावे।
दया करो करुणा चित लाओ, दो मोहि भक्ति विवेका।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, रहूं शब्द मिल एका।

राधास्वामी !

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, क्यों ? पैदा हुआ, जब दुनिया देखी तो ख्याल आया कि इसके बनाने वाला कोई है। उसको पूजता रहा, कभी उसको राम समझा, कभी उसको ईश्वर कहकर पूजा, किस्मत मेरी 1905 में 24 घण्टे रोने के बाद एक दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे यह संतमत दिया। आज उनका यह शब्द पढ़ा गया जिसमें वह गुरु की स्तुति करते हैं :—

धन्य धन्य गुरु परम स्नेही, धन्य दीन हितकारी,
धन्य कृपाला, सहज दयाला, भव भय मेटन हारी।

वो किस गुरु की स्तुति करते हैं ? यह ऐसे गुरु की स्तुति की गई है जो दीन दयाल हो, भव भय

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

के मेटने वाला और कृपालु हो। हम लोग बाहरी गुरु को पूजते हैं। आप सोचो क्या बाहर के शरीर धारी गुरु में यह सारे गुण हो सकते हैं :—

लीला अगम अपार अमाया, अद्‌भुत क्या कोई जाने,
ऋषि, मुनि, योगी, पार न पावें, ज्ञानी नहिं पहिचानें।

वह कहते हैं वो जो गुरु है जिसकी यह प्रशंसा है कि उसको ज्ञानी नहीं पहचान सकते तथा ऋषि मुनि भी उसको नहीं पहचान सकते। मैंने सारी ज़िन्दगी इस लगन में गुज़ार दी। मैं अपनी आत्मा से प्रश्न करता हू कि तू गुरुमत का उपदेश करता है; लोगों को सत्सँग कराता है क्या तूने इस गुरु को देख लिया है जिसके दाता दयाल जी महाराज के इस शब्द में गुण वर्णन किये गये हैं। मैंने जो कुछ समझा वो कहता हूं :—

अगुन, सगुण के मध्य विराजे, नहीं ब्रह्म नहीं माया ?

वह गुरु कौन है ? जो निर्गुण और सगुण के मध्य रहता है, वह न तो ब्रह्म हैं और न वह माया है। अब इन बाणियों ने मेरे दिमाग को पागल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

किया हुआ था। मैं नाक कटों में तो शामिल नहीं हुआ न ही मैंने संतों की जी हजूरी की है। मैं देखना चाहता था कि जिस गुरु की यह प्रशंसा की गई है वह है भी कि नहीं ? वह है। जो मैंने समझा वो मैं बताता हूं :—

रूप अरूप के वरे परे तुम, नहीं, प्रकाश नहीं छाया।

अब देखो ! जिस गुरु की प्रशंसा की गई है, वह कहते हैं कि वह रूप अरूप से परे है यानि उस की शकल भी है और वेशकली से भी परे है, न वह रोशनी है और न छाया :—

सब में व्याप्त तुम्हारी सता, सत्त, असत से पारा।

उस गुरु की सत्ता हर व्यक्ति में है मगर वह सत असत के परे यानि पार है वह गुरु है :—

मन वाणी की गम नहीं, तुम में, सब में, सबसे न्यारा।

वह कहते हैं कि वहाँ मन, वाणी पहुंच नहीं सकते। मेरे दिल में ख्याल आता है कि अगर मन वानी पहुंच नहीं सकते तो इन संतों ने कैसे जाना ?

जब वहाँ मन नहीं जा सकता, बाणी भी नहीं जा सकती तो उन्होंने कैसे जाना ? हम लोगों को उन्होंने अजीब उलझन में डाल दिया। उन्होंने ऐसी वैसी बात कही और साफ़ नहीं कही। मैं कहता हूं जो कुछ लिखा है वह ठीक है। कैसे :—

क्या कह करू तुम्हारि स्तुति, अजर, अमर, अविनासी।
निरालम्ब सब के अधारा, चेतन, घन सुख रासी।
गो गोचर जहां लग मन जाई, सो नहीं देश तुम्हारा।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई बरने पारा।

मैंने क्या समझा ? दावा कोई नहीं, वह गुरु कौन है जो सत, असत से परे है, जिसको मन बाणी नहीं जान सकते, जिसकी इतनी प्रशंसा की गई है। उसका पता मुझे तब लगा जब मुझे यह यकीन हुआ कि मेरे अन्दर जो कुछ शकलें या गुरु का रूप बनता है, बातें होती व ख्याल होते हैं यह मेरे अपने ही मन की कल्पना, विचार और विश्वास है यानि वो तो मेरा अपना ही मन है तो फिर मैं मन को छोड़ कर आगे जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द है जो चीज़ प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वो सत भी है और असत भी है वह उससे परे है। वो सगुण

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

भी है निर्गुण भी हैं मगर दोनों से अलग है, वह साक्षी है वही शब्द को सुनती है, वही प्रकाश को देखती है और मन के चक्र को देखती है। वह जो चीज़ है वह हमारे अन्दर सच्चा सतगुरु है उसकी यह प्रशंसा है। वह कौन है ? वह तुम्हारे से भिन्न नहीं है, वह तुम आप ही हो, वह तुम्हारी अपनी ज़ात है, तुम हो तो सत है, आप देखते हो सत हो, उसको छोड़ दो तुम आप ही असत हो जाते हो। ऐ इन्सान ! जो कुछ है तेरी अपनी ही ज़ात है, तेरा अपना ही आप है, तूं अज्ञान में भटक कर दूसरों के अधीन हुआ हुआ है, कभी देवी के पीछे फिरता है, कभी किसी बाहरी गुरु के पीछे फिरता है कभी किसी के पीछे फिरता है जब कि तेरी अपनी ज़ात ही व तूं आप ही उस परम तत्व की अंश है। जहां तक संत पहुंचे है यह उनकी खोज है।

इसी ख्याल को लेकर स्वामी जी ने लिखा है :— "संत ईश्वर परमेश्वर के पैदा करने वाले हैं।" ऐसा क्यों कहा ? इस तजुर्बे के आधार पर कि उनका अपना आप जो था वो सत और असत का साक्षी था। इसलिए कि तुम हो तो तुम्हारे अन्दर प्रकाश

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

नज़र आएगा। अगर तुम नहीं हो तो न शब्द है, न प्रकाश है। तुम हो तो तुम्हारे अन्दर रोशनी भी आ जाएगी और मन भी आ जाएगा। इसलिए उन्होंने कहा है कि संत ईश्वर और परमेश्वर को पैदा करने वाले हैं। मैं इससे भी आगे जाता हूं, मैं कहता हूं कि अगर भई, कोई आदमी यहां तक जाता है, इतना पहुंच भी गया तो क्या वह कुछ कर सकता है? अगर वही ठीक हैं तो राधास्वामी दयाल स्वयं बीमार क्यों हुये? वह अपनी बीमारी क्यों नहीं दूर कर सके? यह मेरी खोज है। मैं क्या समझता हूं वह जो वस्तु हमारे अन्तर है वह उस परम तत्व की एक किरण है वह न कुछ करती है न कर सकती है (करने वाला मन है) वह केवल साक्षी है यानि देखती है, आधार है इसके हाथ में कुछ नहीं। बाकी जो कुछ इस संसार में हमको मिलता है यह हमारे अपने कर्म हैं। लाख इन्सान वहां पहुंच जाये और अपने आप को कह दे कि मेरी ज़ात ईश्वर, परमेश्वर को पैदा करने वाली है मगर जब उसको शारीरिक कष्ट होगा, मुसीबत आएगी वो उसका सारे का सारा ज्ञान व्यर्थ हो जाएगा। इसलिए मैंने तालीम को बदला है कि

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ऐ इन्सान ! तू तो इस दुनियां में रहता है अपने अमल तथा कर्म को ठीक कर, इन्सान इस ख्याल में न रहे कि मैं शब्द योग करता हूं और मैं इतना ऊंचा चढ़ जाता हूं कि उस अपने आप तक जाता हूं जैसा कि यहां यह लिखा हुआ है। लेकिन जब वह शरीर में आएगा कष्ट होगा। जिससे बड़ों बड़ों को नानी याद आ जाती है।

अभ्यास केवल इसलिए कराया जाता है कि इन्सान को पता लग जाए, उसका भ्रम चला जाएगा कि मैं कौन हूं। मेरा भ्रम चला गया। क्या पता लगा ? मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। वह एक शक्ति है। वह शक्ति क्या है ? मुझे पता नहीं। मैं केवल उस शक्ति की एक किरण हूं बल्कि मैं तो यह समझूँगा कि मैं किरण भी नहीं। जब हिलोर होती है उसमें जो चेतनता होती है उससे सुरत पैदा होती है। लोग कहते हैं कि आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है मैं नहीं मानता। अगर आत्मा अजर; अमर अविनाशी है तो वह हमेशा ही सुख दुःख लेता रहेगा क्योंकि आत्मा जन्म लेता तथा मरता रहेगा यह बात

नहीं है। मैंने यह समझा कि जिन्दगी एक चेतन का बुलबुला है।

इस आधार पर मैंने काम किया है क्या काम किया ? कि भई, अपनी ज़िन्दगिओं को बनाओ। घृणा, द्वेष व ईर्ष्या मत रखो। एक दूसरे के काम आओ तुम्हारे ख्याल में बड़ी ताकत है, मैंने अभ्यास कर के देखा है। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीरचन्द ! अगर तू इतना ऊंचा चढ़ गया, कहता है कि तू अनामी धाम में पहुंच गया, तुम्हें जब शारीरिक कष्ट होता है तो तू अपने शारीर की बीमारी और दुख को दूर नहीं कर सकता ? मैं ना सही क्या यह और संत कर सकते हैं ? मैंने आपको बताया कि राधास्वामी दयाल जिन्होंने यह पंथ चलाया वो पिछले दो वर्ष सख्त बीमार रहे। और संतों का क्या हाल हुआ ? मेरे गुरु महाराज की धाम उजड़ गई। 20 दिन वो भी सख्त तकलीफ में रहे। तो मेरे दिल में ख्याल आता है कि हकीकत व सचाई क्या है। सचाई यह है कि ऐ इन्सान ! एक परम तत्व है। परम तत्व क्या है ? किसी को पता

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

नहीं। उसकी एक अंश इस शरीर में कुदरत के कारण आई है। लोग कहते हैं हम आप नहीं आये, कैसे आ गये ? उसकी लीला का न किसी संत को पता लगा; न किसी ऋषि, मुनि को पता लगा। जिसको जितनी जितनी समझ आई उतना वो कह गये। जहां तक मेरी अपनी समझ है वो यह है कि हम इस दुनिया में रहते हैं, हमको जो कुछ मिलता है हमारा अपना ही ख्याल और अपने ही कर्म का फल मिलता है। अगर आप कर्म नहीं मानते तो फिर यह मानो कि जिसने यह संसार उत्पन्न किया है वह बड़ा ज़ालिम है।

ऐ इन्सान ! उस खुदा के नाम पर तुमने इन्सानी नसल को बांट दिया है। तुम्हारे आपस में झगड़े हैं, दर हकीकत खुदा के नाम पर झगड़े नहीं हैं यह अपनी इज्ज़त, मान और दौलत के लिए हैं लेकिन बहाना मज़हब का है। अगर मज़हब का ही झगड़ा होता तो मुसलमान देशों में झगड़े न होते। तो यह क्या है ? इन्सान इस दौलत, इज्ज़त और मान की हवस में नाम हम धर्म का लेते हैं, आपस

में लड़ते है और यही हमारी मुसीबत का कारण बना हुआ है। यही मैंने समझा है।

कल एक आदमी मेरे पास आया वह कहता था कि यहां हिन्दु परिषद सम्मेलन हुआ था। हिन्दु सम्मेलन में एक व्यक्ति ने भाषण दिया कि मानवता मन्दिर का जो संचालक पंडित फकीर चन्द है यह हिन्दु जाति का शत्रु है। उसने यह कहा, अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द ! तू शत्रु क्यों है ? मैंने उससे पूछा कि उसने दुश्मनी का कारण क्या बताया ? उसने बोला वो शिशु केन्द्र में बच्चों को इस शर्त पर लेता है कि तीन बच्चों से ज्यादा बच्चे पैदा न करें। हानि क्या है ? यह परिवार-नियोजन को केवल हिन्दु जाति पर ठोसते हैं दूसरी जातियों में नहीं हैं। कोई भी जाति परिवार-नियोजन की जिम्मेदार नहीं है। इसलिए कुछ देर के बाद हिन्दू तो कम हो जायेंगे और यह दूसरी जातियां बहुमत में आ जायेंगी। तो आम हिन्दु जाति दूसरी जातियों के अधीन हो जाएगी। इसलिए उसने मुझ को हिन्दु जाति का शत्रु कहा। अब मैं सोचता हूं क्या उसने ठीक कहा ? राजनैतिक दृष्टिकोण से

उसने शत् प्रतिशत ठीक कहा, इसमें कोई झूठ नहीं मगर इस प्रकार के झगड़ों को पैदा करने का जिम्मेदार कौन है ? यह हकूमत । क्योंकि इस प्रजातन्त्र में वर्तमान System of election के कारण ही यह ख्यालात पैदा होते हैं । अगर System of election ठीक हो तो कभी यह Problem पैदा न हो । अतः अब बच्चों को दाखल करने की शर्त मैं बन्द कर दूँगा, मैं हिन्दु जाति का शत्रु नहीं हूं और मेरे लिए सभी एक हैं । मैंने तो यह काम बेहतरी के लिये किया था कि जितने ज़्यादा बच्चे होते हैं उतनी ही माता पिता को मुसीबतें उठानी पड़ती हैं, मगर खैर, मैं सचाई से यह कहता हू कि जब तक यह प्रजातन्त्र में वर्तमान System of election है यह वर्तमान राजनैतिक दल हैं जो इच्छा हो कर लें इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा । मुसीबत व तबाही अवश्य आएगी कोई शक्ति रोक नहीं सकती । कभी भी शान्ति की आशा मत रखो । इसका परिणाम बहुत बुरा होगा और इस ख्याल के असूल को समझ कर मैंने यह 'इन्सान बनो' की आवाज उठाई है कि प्रत्येक इन्सान अपने मन के ख्यालात को शुद्ध करे

और नफ़रत, द्वेष, बुग्ज़, हसद, कीना इनको

अब आप देखो यह हिन्दु संगठन सम्मेलन क्यों हुआ ? सिक्ख खालिस्तान मांगते हैं, उनके बराबर में अब हिन्दु खड़े हो रहे हैं, यह हमारा हकूमत का तरीका इतना खराब है कि इसने ऐसी मुसीबतें लानी हैं जो कि ब्यान से बाहर हैं अब देखो यह कहते हैं कि जो आदधर्मी और दूसरों का आपस में इतफ़ाक व मेल हो जाये मगर यह जो चाहे मर्जी कर ले यह नहीं हो सकता। क्यों ? आदधर्मियों को तुम तालीम दो, सब कुछ दो मगर जब तुम Seats reserve रखोगे तो लायक आदमी जो काम करने वाले हैं उनसे वो जो कम लायक हैं ऊपर चढ़ जाएंगे तो तुम कैसे आशा करोगे कि उनके दिलों में यह गुस्सा नहीं आएगा ? जो चाहे मर्जी कर लें यह Psychology है। अफसोस है मुझे अपने ख्यालात को ब्यान करने का तरीका नहीं आता मगर मैं जो कुछ कहना चाहता हूं मैं चाहता हूं कि मेरी यह आवाज़ हकूमत तक जाये। इस वर्तमान System of election से जो कुछ यह हो रहा है आप देखना कि हिन्दोस्तान में क्या होता है और हमारे लोगों का क्या हाल हो। मैं ऐसा

क्यों कहता हूं ? क्योंकि मैं सब दर्जे पार करके उस गुरु के रूप तक पहुंच चुका हूं जिस गुरु की स्तुति यह गाई गई है और जो इस रास्ते में चलने से मुझ को ज्ञान व अनुभव हुआ है उसके आधार पर मैं यह जाति तजुर्बा कहता हूं कि ख्याल की शक्ति है। जैसा तुम सोचोगे वैसा फल होगा, नफ़रत करोगे नफ़रत मिलेगी, प्रेम करोगे प्रेम मिलेगा, द्वेष करोगे द्वेष मिलेगा, दूसरों का हक खाओगे तुमको देना पड़ेगा। यह मैं नहीं कहता कि जो कुछ मैंने कहा यही ठीक है मगर मेरा ज़िन्दगी का बहुत बार आज़माया हुआ यह तजुर्बा है और क्योंकि जो कुछ मैं अनुभव करता हूं वो ठीक निकलता है इसलिए मुझे ऐसा कहने का हौसला है। इसी हौसले के आधार पर शान्ति प्राप्त करने के लिए इन्सान को क्या करना चाहिए :—

दया करो करुणा चित लाओ, दो मोहि भक्ति विवेका।

यह करना चाहिए। अगर शान्ति है तो केवल यहां है कि एक मालिक परम तत्व है। शान्ति के लिए उस एक मालिक को मानो। हम उसकी किरण हैं जब तक ज़िन्दगी है उसका सहारा पकड़ो। फकीर

चन्द या किसी और गुरु का सहारा नहीं, राम या कृष्ण का सहारा नहीं बल्कि जिस परम तत्व से प्रार्थना की गई है और जिसकी व्याख्या मैंने की है उस परम तत्व का सहारा पकड़ो। जब तक बाहर मुखता है इन्सान का विचार बाहर मुखी है इस दुनिया में शान्ति कहीं भी नहीं। जाग्रत और स्वप्न में सुख और दु:ख दोनों रहेंगे। अत: अन्तर मुखी होकर अपने आपको उसके समर्पित करते रहो मगर उसका सहारा पकड़ने व लेने के लिए सबसे पहले तुमको शब्द योग करना चाहिये। मैं मालिक को मिलने निकला था मालिक का पता लग गया। वह मालिक क्या है ? वह एक आधार है, परम तत्व है, समझ बूझ और अक्ल के साथ भक्ति करो दुनियां में जीते हो तो भी अकल के साथ जीओ :—

राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, रहूं शब्द मिल एका।

अगर कोई शान्ति का मार्ग है तो केवल शब्द योग क्योंकि जिस शक्ति से शब्द निकलता है वह तत्व है उसे चाहे अकाल कह लो, अनामी कह लो, वह कुछ है।

नोट :—

आत्मा हमारा वो Self है जो प्रकाश में रहता है, हमारा प्रकाशमय होना हमारा आत्मापन है। जो प्रकाश है उसका काम फैलना है। अत: जब तक हम प्रकाश में हैं वो जो हमारा आत्मा रूपी प्रकाश है वो कभी कहीं जाएगा कभी कहीं जाएगा। जो आत्मा है उसका जन्म लेना अनिवार्य है क्योंकि जो प्रकाश है यह फैलेगा। सुरत वो चीज़ है जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है।

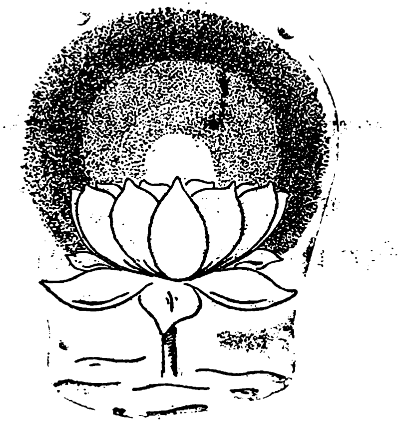

स्वर्गीय सेवा राम जी की संक्षिप्त जीवनी

जब मैं 14 जनवरी 1968 को परम दयाल जी महाराज के दर्शन के लिये उज्जैन के सतसंग में गया तो वहां स्व० श्री दामोदर जी व्यास, श्री गणेश लाल जी तथा स्वर्गीय सेवा राम जी को सतसंगियों की सेवा में ऐसे लीन देखा जैसे उन तीनों की अपनी लड़की का विवाह हो और वे सतसंगियों की सेवा बरातीयों की सेवा की तरह कर रहे थे।

श्री सेवा राम जी की जबानी-व स्वर्गीय श्री दामोदर जी व्यास के साथ अन्य सतसंगियों से जो सुना उसका सार-प्रेम की मूर्ति, कर्त्तव्य परायणता के जागते रूप, गृहस्थ साधू और क्रोध विहीण व्यंक्तित्व को स्मृति में यहां लिख रहा हूं। उनके चोला छोड़ जाने से काल की करालता के सामने मनुष्य की विवशता हैं, यह मान कर मन को समझाया है किन्तु उनकी याद जाती नहीं।

श्री सेवा राम जी का जन्म १५ फरवरी १९२५ को उज्जैन जिले के गांव ढ़ाबला हर्दू में एक गरीब

घर में हुआ था। इनकी माता का स्वर्गवास इनकी सात या आठ वर्ष की आयु में ही हो गया, घर में मां का सुख नहीं और पिता को गृहस्थ के साधन जुटाने में लगा रहने के कारण इनको कोई प्रेम प्यार प्राप्त नहीं हुआ।

थोड़ा होश संभालने पर भारत के देहात का गरीब अन्य सम्पन्न किसानों का काम करने लग जाता है और चौदह पन्द्रह घन्टे काम करता रहता है वैसे ही बचपन में अपने गांव के सम्पन्न किसानों के पशुओं के ग्वाले का काम किया व बाद में चरवाहे का भी काम किया।

गांव के सम्पन्न लोगों के साथ रहने से इनका विबाह तराना के अपनी जाति में श्रीमती गुलाब वाई के साथ १५ वर्ष की आयु में ही हो गया। इन्हीं दिनों बाबा प्रीतम दास नामी एक सज्जन ने जो बाबा सावन सिंह जी के पाठी थे बम्बई आगरा रोड पर देवास जिले चिढ़ावद गांव में अपना डेरा डाला। श्री सेवा राम जी भी बड़ी श्रद्धा से उनके सतसंग में जाते व सेवा करते थे। श्री सेवा राम जी का सम्पर्क परमदयाल जी से श्री दामोदर दास जी द्वारा

हुआ। परमदयाल जी के सतसंग से लोगों की आंखें खुली, भटकना बन्द हुआ और तब से सेवाराम जी वगरह अपने घर रह कर मानवता का जीवन यापन करने लगे। इन्होंने अपना व्यवसाय श्री काशी राम जी के साथ किया। श्री काशी राम जी ने अपने व्यवसाय में इनका हिस्सा निश्चित कर लिया व जब पर्याप्त पूँजी हो गई, सेवा राम जी को उन ने राय दी कि अब तुम अपना स्वतन्त्र व्यवसाय इस पूँजी से करो। इस बीच परमदयाल जी का वार्षिक सतसंग मध्य प्रदेश में हर साल होता रहा व वहां सेवा राम जी पूर्ण लगन और भक्ति से संगत की सेवा करते थे। एक बार परमदयाल जी ने इनकी सेवा से प्रसन्न होकर अपने पास बुलाया व नाम पूछा। नाम सेवा राम सुनकर वे अति प्रसन्न हुवे, उन्होंने पूछा क्या काम करते हो तो सेवाराम जी ने बताया मेहनत करता हूं, परमदयाल जी ने आसीस दिया था तू लाखों का मालिक हो जायेगा, ईमानदारी न छोड़ना।

श्री सेवा राम जी अपना स्वतन्त्र किरानेका काम करने लगे, साधुता, नम्रता, के कारण व्यापार अच्छा चला, आज तराना में दो मकान हैं, खेती की जमीन

है और उनके परिवार में उनकी धर्मपत्नी व सन्तान है। तीन लड़के तीन लड़कियां, छोटा पुत्र ललित है बाकी पांचों बच्चे बच्चियों का विवाह हो गया है, भाईयों में आपस में प्रेम है।

आज सेवा राम जी नहीं रहे, उनकी याद कभी नहीं जाएगी, उज्जैन इन्दौर शाजापुर देवास के ही नहीं सारा सतसंगी समाज जो सेवा राम जी उनकी सेवा व प्रेम को जानता है, उनकी आत्मा की शान्ति के प्रति निश्चित है।

—लेखक उज्जैन का एक सतसंगी

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

ता० १९-१२-८०

प्यारे भाई ! राधास्वामी

तुमने जमाने की शिकायत की ? ठीक है। मैं आपकी शिकायत करता हूं कि आप मुझसे आशीर्वाद मांगने का क्या हक रखते है ? आपके पास क्या सबूत है कि मैं परम पुरुष हूं, क्या पता मैंने स्वांग बनाया हो। जैसा तुम मानते हो अगर हो भी तो कोई अपनी कमाई यूं ही नहीं देता, फर्ज करो मेरे पास कोई ताकत है तो मैं उसको क्यों बांटता फिरूं और फिर कंगाल हो जाऊं।

दोस्त ! मेरे खत का बुरा न मानना कोई किसी को कुछ नहीं दे सकता, जिसको जो मिलता है वह उसका कर्म या उसका विश्वास है। ख्याल की ताकत है मगर वो वहां होती है जहां दोनों तरफ से प्रेम हो, मैं तुम्हे जानता नहीं, मेरे मन में तुम्हारे लिये प्रेम कैसे हो ? —आपका फकीर

कर्म भोग

मेरे साहित्य को पढ़ने वालो! कुछ कहना चाहता हूं। मैंने जीवन भर किसी चीज़ की तालाश के प्रभावाधीन बड़ी सच्चाई से काम लिया। प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज का आदेश था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। आज 43 साल से मैं यह काम कर रहा हूं। मुझे यह दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा व अनुभव किया है यह सब लोगों को लाभ पहुंचा सकता है। मेरी अपनी कुरीद अर्थात हार्दिक खोज को समाप्त करने के लिये मैं अपने लिये इस अनुभव को सत्य मानता हूं।

अब मैं बूढ़ा हो गया। मौज अथवा मेरे कर्मों के कारण मैं इस मानवता मन्दिर बनाने के सिलसिले में फंस गया। केवल एक खुशी है कि

इस फंसाओ में मैंने निज स्वार्थ अर्थात धन, मान प्रतिष्ठा आदि नहीं रखा।

मन्दिर में तीन हस्पताल हैं शिशु स्कूल, प्रैस, लायेब्रेरी और फ्री लंगर है। खर्चे बहुत बड़ गये हैं। लगभग 4500 रुपये हर महीने कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है। 70000 रुपये की दवाइयां हस्पताल में दी गई हैं। शिशु स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। आगे सेहत अच्छी थी तो बाहर दौरा करता था। कुछ तो सच्चाई व्यान करने का अपना कर्तव्य पूरा करता था और कुछ मन्दिर के लिये रुपया जो कोई खुशी से देता ले आता था। अब शरीर अधिक काम नहीं कर सकता। यदि मेरा साहित्य पढ़ने वाले समझते हैं कि मेरा काम प्राय: सब अधिकारी जनता के लिये लाभदायक है तो जो इच्छा हो मन्दिर की सेवा करें।

तमाम साहित्य जो मन्दिर से प्रकाशित होता है डाक खर्च साहित मुफ्त जाता है। मन्दिर पुस्तकों को सूची प्रकाशित कर देता है जो चाहे मुफ्त

मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि जो सज्जन मेरे विचारों से सहमत हैं वे अपने जीवन क्रियात्मिक बनायें। पुस्तकें या सत्संग केवल मन की भ्रम शंकायें दूर कर सकते हैं। यदि अमल नहीं है तो यह पढ़ना लिखना भी एक प्रकार की खुशी देगा अमली शान्ति नहीं मिलेगी । अधिक क्या लिखूं चले चलाओं का समय है, मैंने वसीअत *(Will)* कर दी है कि मेरे बाद शर्मा दयाल जिन का पूरा नाम डाक्टर इश्वर चन्द्र शर्मा है (जो अमेरीका में हैं) और मुन्शी राम भगत मानवता और रुहानियत का प्रचार करेंगे। मन्दिर का सारा काम ट्रस्ट वालों के अधीन है। ट्रस्ट वालों को कह चला हूं कि अगर किसी समय आर्थिक सहायता न मिलने के कारण काम न चल सके तो हस्पताल आदि बन्द कर दें केवल प्रकाशन का काम जारी रखें। अगर यह भी न चल सके तो दाता दयाल जी महाराज का *(Statue)* धरती में गाड़ दें और मन्दिर की सारी सम्पत्ति सरकार या किसी और संस्था को दे दें।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manvta the true religion.
4. Religious Reserch. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America,
14. Yogic Philosophy of Saints,
15. Nam Dan 16. Autobiography of Faqir

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1) अगम का भेद। 2) कबीर साखी। 3) अनभवसार

अध्याय दूसरा
चमत्कार क्या है ?

जन साधारण की दृष्टि से चमत्कार एक ऐसी विचित्र घटना है, जिसकी व्याख्या के लिए कोई स्पष्ट प्राकृतिक कारण दिखाई नहीं देता। उदाहरण-स्वरूप, साधारणतया जब कोई व्यक्ति पानी में डूब रहा हो और वह तैरना नहीं जानता हो, उस समय तक डूबने से नहीं बच सकता, जब तक कि कोई दूसरा व्यक्ति उसे पानी से बाहर न खींच ले। परन्तु यदि कोई ऐसा व्यक्ति जो डूबने के स्थान से, उस घटना के समय सैंकड़ों मील दूर हो, प्रकट होकर डूबने वाले व्यक्ति को पानी से बाहर निकाल लाए, तो ऐसी घटना को चमत्कार माना जायेगा।

ऐसी एक घटना १९७५ में घटित हुई। जब निर्मला पण्डित नामक एक महिला कश्मीर में एक गहरी नदी में डूब रही थी, तो उसने सच्चे हृदय से फ़कीर बाबा से प्रार्थना की कि वह उसे डूबने से बचाएँ।

बाबा फ़कीर उस समय घटनास्थल से सैंकड़ों मील दूर होशियारपुर में थे। निर्मला पण्डित का कहना है कि बाबा फ़कीर उसी समय वहाँ प्रकट हुए और उसको नदी से खींच कर बाहर ले आए। उसके पश्चात वह तत्काल ही अदृश्य हो गए।

एक नहीं, अनेकों ऐसे अन्य उदाहरण हैं, जिनमें फ़कीर बाबा के प्रकट होने के कारण लोग सैंकड़ों तथा हजारों मीलों की दूरी पर दुर्घटनाओं से बचाए गए हैं। ऐसे कुछ उदाहरण अगले अध्यायों में दिए जायेंगे।

इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति बिना किसी वैद्य या डाक्टर के उपचार के किसी भयानक रोग से ठीक हो जाय अथवा एक बांझ स्त्री, जिसे डाक्टरों ने सन्तान पैदा करने के सर्वथा अयोग्य बता दिया हो, गर्भवती हो जाय, तो ऐसी घटनाएं चमत्कार ही कहलायेंगी। ऐसे सैंकड़ों उदाहरण उपलब्ध हैं, जो इस बात का प्रमाण हैं कि लोग फकीर बाबा के चित्र को लगातार देखने मात्र से ही, हर प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोगों, यहां तक कि कैन्सर जैसे भयानक रोग से भी बच गए।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

एक बहुत ही रोचक घटना उस कार ड्राईवर की है, जो बम्बई में कार चलाते समय दुर्घटना-ग्रस्त कार से फ़कीर बाबा के प्रकट होने से बच गया। उस ड्राईवर का नाम हरिशंकर है और वह मेरी बहन श्रीमती कृष्णा साराबागी का ड्राईवर हैं। जब हरि शंकर किसी सेठ की मांगी हुई नई कार को बम्बई में चला रहा था, एक चौराहे पर उसकी कार उलट गई। हरिशंकर अपनी जेब में फकीर बाबा की फोटो रखता था। उसने वह फोटो जेब से निकाल कर तुरन्त कहा, 'ओ बाबा! मुझे बचाओ।' हरि शंकर का कहना है कि बाबा का रूप फ़ौरन प्रकट हुआ और उसने हरि शंकर को कार से बाहर निकाला। हरिशंकर के बाहर निकलने के कुछ क्षण बाद ही कार को आग लग गई और फ़कीर बाबा अदृश्य हो गए। क्योंकि गाड़ी हरिशंकर के नाम पर नहीं थी, इस लिए पुलिस ने उसे चोरी के सन्देह में पकड़ कर जेल में डाल दिया। आधी रात के समय, हरि शंकर ने दुःखी होकर सच्चे दिल से फिर बाबा जी से प्रार्थना की "फ़कीर बाबा! मैं निर्दोष हूं मुझे बचाओ।" उसी समय फ़कीर बाबा

पुलिस कप्तान को स्वप्न में प्रकट हुए और उसे कहा "हरिशंकर नाम के ड्राईवर को तुम्हारे पुलिस के अधिकारियों ने चोरी के सन्देह में हवालात में बन्द कर दिया है, वह बिल्कुल निर्दोष है उसे छोड़ दो।" दूसरे दिन प्रातःकाल पुलिस कप्तान जेल में गया और वहां वास्तव में ही हरिशंकर नाम के ड्राईवर को बन्द पाया। उसने तत्काल ही अपने विशेष अधिकार का प्रयोग करके हरिशंकर को मुक्त कर दिया।

एक और रोचक घटना जो कि बीस वर्ष से भी अधिक पहले घटित हुई, जिसका उल्लेख मैं यहां करना चाहूंगा।

लगभग २० वर्ष पूर्व की एक बहुत ही रोचक घटना है, जिसका उल्लेख मैं यहां करना चाहता हूं। फ़कीर बाबा का एक भक्त श्री चनन सिंह जब फ़कीर बाबा के दर्शन करने आया तो अपने नवयुवक बेटे गुरुदेव सिंह को भी अपने साथ लाया। उसने बाबा से प्रार्थना की कि वह उसके बेटे को आशीर्वाद दें कि वह विदेश में जाकर खूब धन और नाम कमाए। फ़कीर बाबा ने उसे ऐसा ही आशीर्वाद

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

दिया। इस घटना के कुछ ही महीने के बाद वह बालक बीमार पड़ गया। डाक्टरों ने परीक्षा करने के बाद बताया कि वह तपेदिक के रोग की अन्तिम अवस्था पर था। उसे तपेदिक के हस्पताल में भर्ती करा दिया गया। बालक के पिता ने बाबा को पत्र लिखा, "बाबा! मेरा बेटा तपेदिक रोग की अन्तिम अवस्था में है और मृतक शय्या पर हस्पताल में पड़ा है। आपने तो उसे पढ़ने, लिखने, विदेश में जाने तथा नाम और धन कमाने का आर्शीवाद दिया था। आप का वह आर्शीवाद अब कैसे पूरा होगा?"

फकीर बाबा को जब यह पत्र मिला और सैक्रेटरी द्वारा पढ़ कर सुनाया गया, उस समय वह हुक्का पी रहे थे। उन्होंने उस पत्र को अपने हाथ में लेकर उसे मसल कर हुक्के की चिलम में तम्बाकू के साथ जला कर सैक्रेटरी को सम्बोधन करते हुए कहा, "चनन सिंह को लिख दो कि बाबा उसके रोगी पुत्र के तपेदिक के रोग को जला कर पी गए हैं और अब वह बिलकुल स्वस्थ हो जायेगा।"

जब चनन सिंह ने बाबा का पत्र अपने बेटे को सुनाया तो वह तुरन्त मृत्यु शय्या से उठ खड़ा हुआ

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

और चिल्लाया, "बाबा ने मेरा रोग दूर कर दिया है, मैं अब बिल्कुल ठीक हूं, मुझे अब घर ले चलो।" डाक्टरों ने कुछ दिन तक बालक के अनेक परीक्षण करने के पश्चात चकित होकर कहा कि अब इस बालक में तपेदिक जैसे भयंकर रोग के तनिक मात्र भी लक्षण नहीं हैं और वह अब घर जा सकता है। वह बालक इस समय है और फकीर बाबा के आर्शीवाद के अनुसार कैनेडा में सम्पन्न तथा सुखी जीवन व्यतीत कर रहा है और उसने अपने पिता चनन सिंह को भी अपने पास बुला लिया है। १९८० के मई के अन्तिम सप्ताह में मैं, मेरी पत्नी श्रीमती भाग्य शर्मा तथा अमेरिका के कर्नल जोज़फ टक्कर (जो फकीर बाबा को अपना गुरु मानते हैं) के साथ हमिल्टन ओन्टारियो कैनेडा में श्री नन्द सिंह के घर गया। उन दिनों फकीर बाबा अमेरिका तथा कैनेडा का दौरा करने आए हुए थे और नन्द जी के घर रहे थे। वहां पर स्वयं श्री चनन सिंह जी से मिला जो बाबा को मिलने के लिए ब्रिटिश कोलम्बिया (जो हम्लिटन से लगभग ३००० मील दूर है) से आए हुए थे। उन्होंने उपरोक्त सारी घटना को सत्य

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बतलाया। बात करते समय मैंने चनन सिंह जो कि बाबा के प्रति अगाध श्रद्धा तथा आभार का अनुभव किया, फ़कीर बाबा ने ही तो उनके लड़के को जीवन दान दिया था।

जब ऐसी सूचनाएँ निरन्तर प्राप्त होती रहती हैं कि फकीर बाबा ने प्रकट होकर अमुक व्यक्ति के घर आग बुझाई अथवा अमुक छात्र को परीक्षा भवन में रसायनशास्त्र के परीक्षा पत्र के उत्तर लिखवाने के लिए उस छात्र की मेज़ के नीचे प्रकट हुए, तो ऐसी घटनाओं को चमत्कार कहा जायेगा। इसी प्रकार, जब फ़कीर बाबा का रूप, ऐसे व्यक्ति की कठिनाई को दूर करने के लिए प्रकट होता है, जिसने न तो फ़कीर बाबा को देखा है और न ही सम्बन्ध में कभी पढ़ा अथवा सुना है, तो निःसन्देह इस घटना को चमत्कारी ही माना जायेगा। फ़कीर बाबा के सम्बन्ध में ऐसी कई घटनाएँ घटित हुई हैं और निरन्तर देश विदेश में सर्वत्र अब भी घटित हो रही हैं। यदि हम ऐसी घटनाओं के विवरण, धार्मिक ग्रन्थों, पुराणों, अन्जील इत्यादि में पढ़ें, तो सम्भवतया इन्हें काल्पनिक कह कर अस्विकृत कर सकते हैं।

किन्तु मानवता मन्दिर में पत्रों द्वारा तथा व्यक्तियों द्वारा निरन्तर घटनाओं की सूचना मिलते रहना काल्पनिक नहीं कहा जा सकता।

ऐसे तथाकथित चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या क्या हो सकती है ? यदि इनकी कोई वैज्ञानिक व्याख्या है, तो चमत्कारों को अन्धविश्वास पर आधारित अप्राकृत घटनाएँ नहीं कहा जा सकता। फ़कीर बाबा सर्वथा इस बात का निषेध करते हैं कि उन्हें ऐसी चमत्कारी घटनाओं में प्रकट होने का तनिकमात्र भी ज्ञान है। किन्तु वह यह भी नहीं कह सकते कि ऐसी घटनाओं की सूचना देने वाले तथा उन्हें अनुभव करने वाले व्यक्ति झूठे हैं। वह स्वयं घटनाओं की ऐसी वैज्ञानिक व्याख्या देते हैं जो निम्नलिखित दो नियमों पर आधारित हैं :—

१. शक्ति की किरणों के प्रसारण का नियम (The Law of Radiation).

२. इच्छाओं की आवश्यकता तथा पूर्ति का नियम (The Law of Supply and Demand of desires).

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

फकीर बाबा इन दोनों नियमों को प्राकृतिक नियम कहते हैं। हम आगे चल कर चमत्कारों की इस प्राकृतिक व्याख्या पर प्रकाश डालेंगे, यहां पर हमें इस प्रकार की वैज्ञानिक व्याख्या के महत्व पर प्रकाश डालना है।

जब फकीर बाबा निरन्तर यह कहते हैं कि वह इस बात का कोई दावा नहीं करते कि उन्होंने डूबते हुए व्यक्तियों को बचाया है, अथवा उन व्यक्तियों की समस्याओं को प्रकट होकर सुलझाया है जो ऐसी सूचनाएँ देते हैं. उस समय एक प्रश्न उत्पन्न होता है, कि यदि ये सूचनाएँ सत्य हैं, और यदि फकीर बाबा भी सत्य कहते हैं कि वह स्वयं इन घटनाओं का चेतन मन में कोई ज्ञान नहीं रखते, तो इन घटनाओं में घटनास्थल पर प्रकट कौन होता है? फकीर बाबा का रूप धारण करने वाला वंचक कौन है? यह प्रश्न इसलिए उठाया जा रहा है, क्योंकि सभी वे घटनाएँ, जिनकी सूचनाएं प्राप्त हुई हैं ऐसी है जिनमें फकीर बाबा का व्यक्तित्व साक्षात प्रकट होता है। किन्तु प्रायः सभी घटनाओं में उनका आकार प्रकाश से निकलता है। फकीर बाबा का

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कहना है कि यह सब कुछ व्यक्ति विशेष के विश्वास का परिणाम है और उसकी उस प्रबल प्रेरणा का फल है, जो उसकी इच्छा पूर्ति से सम्बन्धित है। सम्भवतया वह उग्र इच्छा, जिसकी पूर्ति असम्भव होने के कारण, उस व्यक्ति को पूर्ण रूप से असहाय बना देती है, उस समय उस व्यक्ति का अहंभाव क्षण भर के लिए लुप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में, वह निःसहाय व्यक्ति पूर्णतया आत्म समर्पण कर देता है। क्योंकि उसका यह आत्म समर्पण फकीर बाबा के प्रति होता है, इसलिए उस व्यक्ति को फकीर बाबा का ही साक्षात्कार होता है। ऐसे व्यक्ति का यह विश्वास होता है कि फकीर बाबा का परमात्मा से ऐक्य है और इसलिए फकीर बाबा ही उसकी समस्या को सुलझा सकते हैं। क्योंकि ऐसे व्यक्तियों का विश्वास, फकीर बाबा के व्यक्तित्व को ही दिव्य स्वीकार करता है, इसलिए वे व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति अथवा देवता के आकार को न देख कर फकीर बाबा को ही देखते हैं।

फकीर बाबा का कहना है कि इन तथाकथित चमत्कारी घटनाओं की व्याख्या भी यही है, जो

अन्य धर्मों के अनुयायियों से सम्बन्धित है। अनेक ऐसी घटनाएं, जहां धर्मों में, उनके अनुयायियों के साथ घटित होती हैं, जिसमें असाध्य रोगों का उपचार तथा धर्म संस्थापक अथवा पैगम्बर आदि के प्रकट होने की घटनाओं का उल्लेख दिया जाता है। क्योंकि वह व्यक्ति अथवा पैगम्बर जो प्रकट होता है, स्वयं ऐसी अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में चेतनरूप से ज्ञान नहीं रखता, और क्योंकि उसके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति अनुयायियों के अगाध विश्वास का परिणाम होती है, इसलिए ऐसी घटनाओं का वास्तविक आधार अथवा कारण, उस व्यक्ति अथवा पैगम्बर का व्यक्तित्व नहीं होता और न ही होना चाहिए, जिसका रूप उसके अनुयायी देखते हैं।

फ़कीर बाबा का कहना है कि विश्वास करने वाला व्यक्ति अपने इष्ट के आकार को शक्ति की किरणों के प्रसारण के नियम (Law of Radiation) के कारण देखता है। इस नियम के अज्ञान के कारण वह, अपने इष्ट के आकार को ही देवी शक्ति का स्रोत मान लेता हैं और उसे ईश्वर कह कर एक नए धर्म की स्थापना कर देता है। यही कारण है कि

मानव समाज अनेक मत मतान्तरों तथा धार्मिक गुटों में छिन्न भिन्न कर दिया है। यदि फ़कीर बाबा की इस व्याख्या को समझ लिया जाय, तो धर्म की कट्टरवादिता को हटाया जा सकता है। इस बात पर बल देने की अपेक्षा कि केवल भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध, मूसा, ईसा, मसीह, मोहम्मद, अथवा फ़कीर बाबा ही ईश्वर अथवा ईश्वर का पुत्र एवं पैगम्बर हैं, लोग इस तथ्य को समझ जायेंगे कि व्यक्तिगत रूप में, इनमें से कोई भी एक पूर्ण ईश्वर नहीं है। इनमें से कोई भी एक पृथक् रूप से ईश्वर की अभिव्यक्ति नहीं, किन्तु साथ ही साथ ईश्वर इन सभी के द्वारा अभिव्यक्त है।

ऐसी व्याख्या की अनुपस्थिति में इतिहास के आरम्भ से ले कर आज तक धर्मों तथा मतमतान्तरों ने तथाकथित चमत्कारों के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तियां उत्पन्न कर रखी हैं। जैसा कि हम आगे चल कर देखेंगे कि इन सभी घटनाओं का सामान्य लक्षण अनुभव करने वाले व्यक्ति की वह प्रबल इच्छा होती है, जो व्यक्ति विशेष को दिव्य मान लेने के विश्वास से सम्बन्धित होती है और इसलिए विश्वास करने

वाले व्यक्ति को ।

ऐसा क्यों होता है कि जिस ईसाई धर्म के अनुयायी ने भगवान कृष्ण अथवा बुद्ध का नाम नहीं सुना वह ऐसी (चमत्कारी) घटनाओं का अनुभव केवल ईसा मसीह के व्यक्तित्व के कारण ही करता है ? इसी प्रकार ऐसा क्यों है कि एक हिन्दु, जिसने ईसा मसीह का नाम नहीं सुना वह केवल भगवान राम अथवा राम के साक्षात्कार का ही अनुभव करता है ? यदि इस समस्या पर अधिक विचार किया जाय तो तर्क संगत उत्तर यही होगा कि विभिन्न संस्कृतियां तथा धर्म अपने अनुयायियों के मन पर बिभिन्न आकारों के संस्कार और प्रभाव डालते हैं । ये मानसिक आकार ही विशेष धर्मों एव मतमतान्तरों के अनुयायियों के द्वारा अनुभूत किए जाते हैं । प्रत्येक धर्म के अनुयायी, इन तथाकथित चमत्कारी घटनाओं के सामान्य स्त्रोत को ढूंढने की अपेक्षा अपने आपको बिभिन्न विभागों में विभक्त कर देते हैं ।

भौतिकविज्ञान दिन प्रति दिन उन्नति कर रहा है और प्रामाणिक माना जा रहा है । उसका कारण यह है कि विश्व के वैज्ञानिक प्राकृतिक घटनाओं के

सम्बन्ध में अपने अपने अनुभवों एवं प्रयोगों के परिणाम का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं। परन्तु इसके विपरीत विभिन्न धर्मों तथा मतमतान्तरों के ठेकेदार न ही केवल अपने धार्मिक अनुभवों कि दूसरों के धार्मिक अनुभवों से तुलना नहीं करते बल्कि अपने धर्म विशेष को सबसे ऊंचा बताकर दूसरे धर्मो की निन्दा करते हैं। अपने धर्म विशेष की प्रयोगशालाओं के द्वार दूसरे धर्मों में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों के लिए बन्द कर देते हैं। ऐसे संकुचित विचार रखने वाले धर्म के ठेकेदार यह समझते हैं कि केवल उन्हीं के धर्म संस्थापक को ही ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ है और अन्य सभी धर्म तथा धर्म संस्थापक झूठे हैं। यही कारण है कि ईसाई इस बात का दावा करते हैं केवल ईसा मसीह ही ईश्वर का एकमात्र पुत्र है, जो लोग ईसा को नहीं मानते वे सीधे नरक में जाते है। मुसलमान केवल हज़रत मोहम्मद को सब से ऊँचा पैगम्बर मानते हैं। उनके अनुसार जो व्यक्ति इस्लाम को नहीं मानता वह काफ़िर अथवा नास्तिक है। हिन्दु धर्म में यह स्वीकार किया गया है कि ईश्वर सभी जीवों में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

समानरूप से उपस्थित है, इसलिए अहिंसा को परम धर्म मान कर वैष्णव तथा जैन लोग माँस नहीं खाते, मच्छलियों को आटा डालते हैं, पक्षियों को दाना चुगाते हैं और चींटियों को शक्कर डालते हैं। किन्तु खेद की बात यह है कि वे धर्मात्मा लोग अपने ही धर्म में अपने ही धर्म के कुछ लोगों को अछूत घोषित करके उनसे घृणा करते हैं और ईसाईयों तथा मुसलमानों को म्लेच्छ कहते हैं। यही कारण है कि इन धार्मिक ठेकेदारों के कारण धर्म तथा धार्मिक संस्थाएँ अधोगति को प्राप्त हो रही हैं।

फ़कीर बाबा द्वारा दी गई चमत्कार सम्बन्धी व्याख्या जो आगे चल कर दी जायेगी विशेष धार्मिक तथा दार्शनिक महत्व रखती हैं। उनकी यह व्याख्या मानव मात्र को विभाजन, धार्मिक युद्धों, धर्म के नाम पर हत्याओं और भगवान के नाम पर मनुष्यों को जीवित जला देने इत्यादि के रोगों से बचा सकती है। धार्मिक कट्टरता यह प्रमाणित कर रही है कि आज इतनी वैज्ञानिक उन्नति के बाद भी, मनुष्य जंगली तथा असभ्य है। यह अत्यन्त खेद की बात है कि आज भी आयरलैण्ड में ईसाई ईसाईयों की, शान्ति

के देवता ईसा मसीह को नाम पर हत्या कर रहे हैं। मध्यपूर्व में मुसलमान, ईसाई तथा यहूदि लगातार यद्ध कर रहे ईरान में अल्लाह के नाम पर हज़ारों व्यक्तियों को गोली से उड़ाया जा रहा है। इसी प्रकार, १९४७ में भारत में धर्म के नाम पर देश को दो टुकड़ों में बांट दिया गया। हिन्दु और मुसलमान दोनों ने लाखों असहाय व्यक्ति, बच्चों, बूढ़े तथा महिलाओं को मौत के घाट उतार कर निर्दयता तथा बर्बता का प्रमाण दिया। ऐसी निर्मम घटनाओं से द्रवित होकर फ़कीर बाबा ने १९४७ में इस बर्बरता को समाप्त करने के लिए, होशियारपुर में 'मनुष्य बनो' का नारा लगा कर मनावता मन्दिर की स्थापना की थी। फ़कीर बाबा के अनुसार, मनुष्य अपने आप में पूर्ण होने का कारण ईश्वर का साक्षातरूप है। कोई भी मत अथवा धर्म जो मानवता से वंचित है एक अभिशाप है।

लोगों में धर्म तथा ईश्वर के प्रति सच्चा ज्ञान न होने के कारण ही हिंसात्मक घटनाएं घट रही हैं और विश्व भर में घृणा का प्रसार हो रहा है। धर्म के नाम पर भोले भाले व्यक्तियों को ठगा जा रहा है

और मानवता के टुकड़े टुकड़े किए जा रहे हैं। मानवमात्र को संघर्ष, दुः , अज्ञान तथा धर्म के ठेकेदारों से ठगे जाने से बचाने के उद्देश्य से प्रेरित होकर फकीर बाबा ने इन सभी दुःखों के मूल कारण के अनावरण का कार्य सम्भाला है। उनकी परम दया की प्रवृत्ति ने उन्हें उन गुप्त भेदों को खोल देने पर प्रेरित किया है, न्हें अभी तक विश्व के आध्यात्मिक नेताओं, धार्मिक गुरुओं तथा पैगम्बरों ने पूर्णतया स्पष्ट नहीं किया था। फकीर बाबा के द्वारा तथाकथित चमत्कारी घटनाओं में अपनी उपस्थिति को स्वीकार न करने का अर्थ यह है कि उनका भौतिक शरीर दिव्य नहीं ; दिव्य कुछ और ही है फकीर बाबा की इस ईश्वरीय सत्य सम्बन्धी खोज के आधार पर उन सभी तथाकथित चमत्कारों की व्याख्या की जा सकती है, जो विभिन्न धर्मों के पैगम्बरों, धर्म संस्थापकों तथा रुओं से सम्बन्धित है। इसलिए यहाँ पर हिन्दु धर्म, जैन धर्म, बुद्ध धर्म, यहूदि तथा ईसाई धर्म तथा इस्लाम जैसे विश्वव्यापी धर्म के संदर्भ में जो घटनाएं बतलाई जाती हैं, उनका उल्लेख करके यह बतलाया जा सकता है कि इन मैं से किसी धर्म के महत्व को

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

होगा ?" कुम्हार ने अपनी रोती हुई पत्नी को सान्त्वना देते हुए कहा, "भगवान सब की रक्षा करने वाले हैं। हमें नारायण से प्रार्थना करनी चाहिए कि भट्ठी जब तीन दिन के बाद ठण्डी हो जाय तो बिल्ली के बच्चे सुरक्षित पाए जाये।' दोनों पति पत्नी ने मिल कर नारायण से सच्चे दिल से प्रार्थना की। प्रह्लाद अपने सहपाठियों के साथ यह सब देख रहा था उसने कुम्हार की पत्नी से पूछा कि नारायण कौन है। कुम्हार की पत्नी ने उत्तर दिया कि वही विश्व के एक मात्र स्रष्टा, रक्षक और पालनकर्त्ता हैं। प्रह्लाद ने पूछा कि क्या तीन दिन के बाद बिल्ली के बच्चे सुरक्षित मिलेंगे। जब कुम्हार की पत्नी ने इसका उत्तर हाँ में दिया तो प्रह्लाद् ने कहा कि वह तीन दिन के बाद यहां आकर बिल्ली के बच्चों को स्वयं देखेगा।

ठीक तीन दिन के पश्चात जब भट्ठी ठण्डी हुई, तो कुम्हार एक एक करके पके हुए बर्तनों को भट्ठी से निकालने लगा। उस समय राजकुमार प्रह्लाद भी अपने साथियों के साथ वहां उपस्थित था। उसने अपनी आखों के साथ देखा कि सभी

बर्तनों के हटाने के पश्चात, सबसे नीचे वाले पात्र में बिल्ली के बच्चे एक दूसरे से खेल रहे थे। इस चमत्कारी घटना से राजकुमार प्रहलाद् बहुत प्रभावित हुआ और भगवान नारायण में उसका अगाध विश्वास हो गया। वह तुरन्त नरायण, नरायण का पाठ करने लगा और अपने सहपाठियों को भी यह पाठ पढ़ाया। जब प्रहलाद् और उसके साथी नारायण, नारायण गाते हुए पाठशाला में पहुंचे तो पाठशाला में अन्य सभी छात्र भी नरायण नारायण गाने लगे। इस घटना की सूचना तत्काल ही हिरण्यकश्यप को मिली। जब उसे यह पता चला कि उसके अपने बेटे प्रहलाद ने ही राज्य के नियमों को भंग करके नारायण का आन्दोलन आरम्भ किया है तो उसने प्रहलाद को बुला कर प्यार से समझाया कि वह नारायण का नाम न ले। परन्तु प्रहलाद नहीं माना और उसने नारायण, नारायण का जाप आरम्भ कर दिया। हिरण्यकश्यप के क्रोध का पारावार नहीं रहा और उसने आदेश दिया कि प्रहलाद को एक ऊंचे पहाड़ के शिखर से नीचे फिकवा दिया जाय। जब ऐसा किया गया,

तो सबको यह देख कर महान आश्चर्य हुआ कि प्रहलाद् 'नरायण' 'नारायण' का नाम लेते हुए पृथ्वी पर आ गिरा और उसे तनिक भी चोट नहीं आई।

अब तो हिरण्यकश्यप का क्रोध और भी बढ़ गया और उसने अपने शत्रु पुत्र को शीघ्र से शीघ्र समाप्त करने की एक भयानक योजना बनाई। उसकी बहन होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि अग्नि उसे जला नहीं सकेगी। हिरण्यकश्यप ने होलिका से कहा कि वह प्रहलाद् को अपनी गोदी में ले कर जलती हुई चिता में बैठ जाय। होलिका ने अपने भाई की आज्ञा का पालन किया। प्रहलाद् ने तत्काल ही 'नारायण' 'नारायण' का जाप आरम्भ कर दिया। हिरण्यकश्यप को अब तनिक-मात्र भी सन्देह नहीं था कि प्रहलाद् आग से झुलस कर मर जायेगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। लोगों ने आश्चर्य चकित हो कर इस चमत्कारी घटना को अपनी आखों से देखा कि वरदान प्राप्त होलिका तो आग में जल कर भस्म हो गई और नारायण भक्त प्रहलाद को आंच तक नहीं आई।

अब तो क्रोध के मारे हिरण्यकश्यप पाग जैसा हो गया और उसने ह ल को समाप्त करने की एक अति भंयकर योजना बनाई। उसके महल के अन्दर लोहे का एक बहुत बड़ा स्तम्भ था। उसके स्तम्भ को अग्नि से इतना गर्म कराया कि वह लाल हो गया। तब उसने प्रहलाद को कहा कि या तो वह नारायण का नाम लेना बन्द कर दे या उस जलते हुए स्तम्भ का आलिंगन करे। बालक प्रहलाद को अपने नारायण में पूरा विश्वास था, वह जानता था कि जब जलती हुई भट्ठी में बिल्ली के बच्चे बच सकते हैं तो उसके लिए भी यह शीतल हो जायेगा और उसको आंच तक भी नहीं आयेगी। उसी समय उसकी दृष्टि एक पीपिलिका पर गई जो उस खम्बे के ऊपर चली जा रही थी। उससे उसका विश्वास और भी बढ़ गया और वह 'नारायण' 'नारायण' कहते हुए जलते हुए लाल स्तम्भ का आलिंगन करने के लिये आगे बढ़ा। ज्योंहि उसने स्तम्भ को छुआ स्तम्भ बर्फ की भांति ठण्डा हो कर दो भागों में फट गया। उस फटे हुए स्तम्भ में से मानवी शरीर और शेर के सिर और पंजों वाला एक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

भयंकर प्राणी नरसिंह प्रकट हुआ और उसने आगे बढ़ कर हिरण्यकश्यप को पकड़ लिया। यह सन्ध्या का समय था, इसलिए न दिन था ना रात, और नरसिंह का रूप न तो पूरा मनुष्य जैसा था न जानवर जैसा। हिरण्यकश्यप को यह भी वरदान था कि वह न घर के अन्दर मरेगा न बाहर। अतः नरसिंह ने हिरण्यकश्यप को महल की देहलीज में बैठ कर अपने पंजों से उसके शरीर को चीर डाला। कहा जाता है कि भगवान के नरसिंह रूप ने प्रह्लाद् को आर्शीवाद दिया और अदृश्य हो गये। उसी समय से आज तक हिन्दु धर्म में नरसिंह को नारायण के अवतार रूप में पूजा की जाती है और प्रह्लाद् को नारायण का पूर्ण भक्त माना है। लोग आज भी प्रह्लाद् के चमत्कारी रूप से बचाए जाने की कहानी बड़े गर्व से अपने बच्चों को सुनाते हैं।

फ़कीर बाबा का कहना है कि मनुष्य का अपना विश्वास ही ऐसे २ रूप का निर्माण कर सकता है, जो उसकी इच्छा को पूर्ण कर दे। क्योंकि जिन परिस्थितियों में प्रह्लाद् अपने राक्षस पिता से बच सकता था उसके अनुसार नरसिंह का रूप ही आवश्यक था इसलिए प्रहलाद के दृढ़ विश्वास

नकल पत्र जो हजूर परम दयाल जी महाराज होशियारपुर की ओर से मौलाना सैयद अबदुल हसन अली नदवी को लिखा गया

आदरणीय शाह साहिब जी,

असलामोलेकम,

'मानवता के सन्देश' के क्रम में कुछ पुस्तकें आपने भेजी। कुछ पढ़ी हैं, कुछ पढ़ूंगा। मैंने भी ऐसी भावनाओं के प्रभावाधीन जिन जज़्बों के वश में आकर आपने मानवता के सन्देश का विचार लिया, 15 अगस्त सन् 1947 को 'मनुष्य बनो' का विचार लिया था। यह विचार मुझे 24 घण्टे समाधिस्थ रहने के बाद उत्पन्न हुआ था। उस समय मनुष्य बनो नामक जो पुस्तक लिखी थी वह आपको भेज र हूं।

किन्तु 1947 से लेकर आज सन् 1980 के अन्त तक मुझे अध्यात्मिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के जो निज अनुभव प्राप्त हुए, उनसे मैं यह अनुभव करता हूं कि कोई भी मनुष्य जो कर्म उसने किए हुए हैं या जो भाव विचार किए हुए है

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

उनके प्रभाव के फल से वह बच नहीं सकता। यह मेरा अपना अनुभव है। इसे सिद्ध करने के लिए में आपको एक उदाहरण देता हूं।

आप रात को सो जाते हैं और स्वप्न में चले जाते हैं। आपको क्रोध आता है किसी को मुक्का मार देते हो तो हाथ हिल जाता है, यदि मनुष्य स्वप्न में कोई भयानक दृश्य देखता है तो डर के मारे उसकी जबान बड़ बड़ाती है। स्वप्न में मनुष्य अपने ख्याल से एक काल्पनिक स्त्री बना लेता है तो उसका वीर्यपात हो जाता है। यह स्वप्न के विचार इन्सान के अपने वश में नहीं होते फिर भी इनका प्रभाव इन्सान के शरीर पर पड़ता है तो जो विचार हम जाग्रत अवस्था में अपनी इच्छानुसार करते हैं उनका प्रभाव क्यों न होगा ? इस समय संसार में गृहस्थ, धार्मिक और राजनैतिक सम्बन्धी ईर्षा, द्वेष, घृणा, मतसर स्वार्थ के लिए अपनाये जा रहे हैं उनके प्रभाव से मानव जाति किसी कारण भी नहीं बच सकती।

मैंने सारी आयु इस मानसिक और आत्मिक जीवन की खोज की हैं और मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि मानव जाति पर कष्ट आयेंगें। चाहे

उनका रूप कोई भी हो। युद्ध हो, बाढ़ हो, बीमारियां हों, मगर कोई बच नही सकता! आपके इस्लाम में लिखा है कि बीसवीं शताब्दी में प्रलय आयेगी। यह कहां तक सत्य है, यह तो जिसने लिखा हुआ है उसे ज्ञात होगा किन्तु मेरा अनुभव है कि विनाश होगा। इस विनाश के पश्चात मानवता का राज आयेगा। आप काम करें। यह आपका अपना ख्याल है मेरा अपना ख्याल है। आप अपने विचार में मगन हैं मैं अपने ख्याल में मस्त हूं किन्तु मानव जाति का भविष्य ठीक मालूम नहीं होता। संसार में जब तक इन्सान जीवित है वह कुछ न कुछ करने को विवश है। बैसाखी पर 13-14 अप्रैल को प्राय: हर वर्ष सतसंग होता है मगर साथ ही मैं सोचता हूं कि इन सतसंगो, सभाओं और सम्मेलनों का परिणाम मेरी समझ में कोई विशेष लाभ नहीं देगा।

शाह साहिब, मस्तिष्क के अन्तर एक सागर लहराता है। इस सागर में मैं बहे जा रहा हूं। किनारा केवल इस एक शान्ति से मिलता है कि जब से यह संसार बना है यह खैंचातानी, संघर्ष हरेक युग में होते रहते हैं और होते रहेंगे। वह व्यक्ति जो अपनी दृष्टि को इस त्रिगुणात्मिक जगत से हटा कर

अपनी ज़ात अथवा आपे को जिसको मुसलमान अल्लाह कहते हैं, हिन्दु परम तत्व कहते हैं उसकी ओर नहीं ले जायेगा इन्सान को शान्ति नहीं मिल सकती। इस संसार को बनाने वाला ब्रह्मण्डी मन है जिसको साधारणतया संसार वाले खुदा, रब व मालिक कहते है। फकीर व सन्त घोषणा करते हैं कि ऐ इन्सान! यह संसार ऐसा ही रहेगा। तू अपने आपको इससे हटा कर अपनी ज़ात अथवा आपे अल्लाह की ओर रख, और अपने जीवन को आनन्द से गुज़ार! जो भलाई तुमसे हो सकती है वह कर जा।

हज़रत! कुछ लिखूं! इन मजहबों, इन पन्थों, इन धर्मों ने इतनी अज्ञानता फैलाई है कि सच्चाई को केवल सकेतों में प्रकट किया। स्पष्ट नहीं किया। मैं अपना अनुभव कहता हूं कि जो कुछ भी इन्सान के अन्तर प्रकट होता है वह उसकी अपनी ही श्रद्धा, अपना ही विश्वास है। न कोई राम वाहर से आता है, न कृष्ण, न मुहम्मद और न कोई और अवतार और गुरु ही बाहर से आते हैं। मैं क्यों कहता हूं? लोग मुझे लिखते हैं कि मेरा रूप उनके अन्तर उनकी विपत्ति के समय प्रकट होता है, मरते समय

ले जाता है, औषधियां वता जाता है। भार
में ही नहीं बल्कि अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी में
और हजरत साहिब ! मैं शपथ पूर्वक कहता हू कि
मुझे कोई पता नहीं और मैं कहीं नहीं जाता। इस
अज्ञान के कारण मानव जाति भिन्न-२ मज़हबों
सम्प्रदायों तथा धर्मो में बंट गई और उनकी
लड़ाईयां होने लगी। मन्दिर अथवा मस्जिद की
ईंट उखड़ गईं, झगड़े हो गए। मजहबी पुस्तक का
अपमान हो गया रक्तपात हो गया। हज़रत मुहम्मद
साहिब का एक बाल कशमीर में गुम हो गया
सैकड़ों मारे गए। इसलिए मैंने उत्साह करके
'इन्सान बनो' की अवाज उठाई है ताकि इन्सान इस
मन के चक्र में अज्ञान में आकर इन धर्मों और पन्थों
की ग़लत समझ के कारण हमारी आपस में घृणा,
और द्वेष न हो। हर धर्म ने अपने आपको सबसे
बड़ा और दूसरों को नीचा बताया। परिणाम
स्वरूप शिय्यासुन्नी की लड़ाई, मुसलमानों के 72
फिरके, हिन्दुयों के अनगिनत सम्प्रदाय बने। फकीरों
की गद्दीयां बन गईं। सन्यासी और योगी आपस
में लड़ते हैं। इस दशा को देख कर अपने सतगुरु

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज जो फ़कीरों में शिरोमणि थे उनके आदेशानुसार कि चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल जाना मैंने 'इन्सान बनो' की अवाज उठाई है। जब तक कोई किसी धर्म, किसी पन्थ के साथ बन्धा हुआ है वह अध्यात्मिकता को प्राप्त नहीं कर सकता।

धर्म और पन्थ इन्सान को केवल लक्ष्य स्थान तक पहुंचाने के लिए हैं। लक्ष्य स्थान केवल ज़ात या आपे से एक हो जाना है। एक हो जाना ही सच्चाई है। हम प्रकाश और शब्द को अपने अन्तर पकड़कर उस ज़ात में लय हो सकते हैं। बाकी सब नीचे की अवस्थाऐं हैं। शेष फिर कभी।

मेरा उद्देश्य यह है कि प्रत्येक धर्म वाला अपने आत्माभिमान अथवा अपनी धार्मिक टेक का त्याग करके मानवता का अनुयायी बने। ईश्वर, खुदा अथवा मालिक की पूजा जन-२ की सेवा करना है और प्रकाश और शब्द ही उस मालिक ईश्वर या खुदा का प्राकट्य अथवा रूप है।

—आपका फकीर

'परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज का बसन्त प्रोग्राम

अपने कर्मों का मारा हुआ इस 95 वर्ष की आयु में बुढ़ापा है लेकिन दौरे का प्रोग्राम बना रहा हूं। दोस्तो ! प्रण किया था कि अपना जिन्दगी का अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी ने आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने आप ही दाता दयाल जी के रूप में यह विश्वास किया था कि वह परम तत्व मालिक के अवतार हैं। इसलिए विवश होकर उनके आदेश को मालिक का आदेश समझकर पालन करना जरूरी हो गया। इसके अतिरिक्त अपने खोटे कर्मों की वजह से अपने कार्य को चलाने के लिये मानवता मन्दिर बनाया। मैं इस ख्याल से बाहिर जाता हूं कि सच्चाई से मन्दिर का काम, यहां Free publication, Free Shishu School, Free Hospital हैं इनको सहायता मिलती है।

मैं हाथ बान्धकर जो सज्जन मुझे बुलाते हैं या मेरे सतसंग में आयेंगे उनको कहूंगा कि मेरी बात को समझें, मनन करें, और यदि बुद्धि माने कि मैं ठीक कहता हूं तो उस पर अमल करें वरन् सतसंग का कोई लाभ नहीं। आपका आना और मेरा बुढ़ापे में कष्ट उठाना बिल्कुल व्यर्थ होगा।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

17-1-81 को होशियारपुर से रवाना होकर दिल्ली पहुंचगा और 19-1-81 को दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा ~~हनमकुण्डा~~ फिर 23-1-81 को देहली की वापसी। 24 जनवरी से 6-2-81 तक दिल्ली में ठहराव मगर इस समय में अलीगढ़, मथुरा और मोदी नगर वाले सतसंगी अगर ले जाना चाहें तो दिल्ली में आकर तारीख का फैसला कर लें। हम पांच आदमी होंगे सभी को हमारा खर्च सहन करना पड़ेगा।

6-2-81 या 7-2-81 को हवाई जहाज द्वारा हैदराबाद। साथ के तीन व्यक्ति गाड़ी द्वारा 5-2-81 को हनम कुण्डा जायेंगे। 8-2-81 से 16-2-81 तक आन्ध्र-प्रदेश के विभिन्न भागों में सतसंग होगा। 16-2-81 को हवाई जहाज द्वारा बम्बई। मेरे आदमी 15-2-81 को हैदराबाद से बम्बई गाड़ी द्वारा चले जायेंगे। 16-2-81 से 23-2-81 तक बम्बई। 22-2-81 या 23-2-81 को बम्बई से इन्दौर और मेरे आदमी बम्बई से इन्दौर को 21-2-81 को रवाना हो जायेंगे। पांच दिन इन्दौर, उज्जैन आदि ठहर कर 1-3-81 को हवाई जहाज द्वारा दिल्ली आ जाऊंगा। पूरा प्रोग्राम गाड़ी नं०. आदि अगले महीने के अंक में छप जायेगा। 2-3-81 या 3-3-81 को होशियारपुर आ जाऊंगा। —आपका फकीर

SHIV DEV RAO PRESS

की ओर से सभी MANAV MANDIR

पढ़ने वालों को

नये वर्ष की मुबारिक हो

From : Manager,
SHIV DEV RAO PRESS

परमसन्त, परमदयाल
फकीर चन्द जी महाराज

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL